

काकडी

वाण:- श्लोक, अल्का, अमृता, माधुरी, हरिता, मानसी, सरिता.

योग्य हवामान:- लागवडीसाठी कमाल तापमान ४०° सेल्सिअस आणि किमान २०° सेल्सिअस असावे. चांगल्या वाढीसाठी आणि फुलांसाठी २५-३०° सेल्सिअस तापमान चांगले असते. जास्त पाऊस, आर्द्रता आणि ढगाळ हवामानामुळे कीटक आणि रोगांचा प्रसार वाढतो. जास्त तापमान आणि प्रकाशाच्या परिस्थितीत, जास्त नर फुले येतात, तर उलट परिस्थितीत, मादी फुलांची संख्या जास्त असते.

जमीन :- या पिकास रेताड किंवा मध्यम ते उत्तम निचऱ्याची भारी जमीन चालते. रेताड जमिनीत पीक लवकर येते. भरपूर सेंद्रिय खताचा वापर केल्यास हे पीक हलक्या जमिनीत चांगले येते, चोपण जमिनीत लावू नये.

जमीन तयार करणे:- जास्त उत्पादनासाठी चांगली तयार केलेली जमीन आवश्यक असते. माती मऊ होईपर्यंत २-३ नांगरणी करा.

खत आणि खते:- शेत तयार करताना, प्रति हेक्टर २५ ते ३० टन चांगले कुजलेले शेणखत किंवा कंपोस्ट मातीत मिसळा. काकडीच्या लागवडीसाठी ८० किलो. नायट्रोजन, ६० किलो. फॉस्फरस आणि ६० कि.ग्रा. पोटॅश हेक्टरी द्यावे. पेरणीच्या वेळी फॉस्फरस आणि पोटॅशची पूर्ण मात्रा आणि नायट्रोजनची अर्धी मात्रा द्यावी. उरलेले नायट्रोजन दोन समान भागांमध्ये विभागून पेरणीनंतर २० आणि ४० दिवसांनी तण उपटण्यासोबत द्यावे आणि नंतर मातीने झाकावे.

पेरणीची वेळ: मुख्य पीक म्हणून, फेब्रुवारी आणि जूनच्या पहिल्या आठवड्यात मैदानी भागात पेरणी केली जाते. दक्षिण भारतात जून ते ऑक्टोबर या कालावधीत पेरणी केली जाते, तर उत्तर भारतातील डोंगराळ प्रदेशात एप्रिल-मे मध्ये पेरणी केली जाते. उन्हाळी पिकाची लवकर काढणी होण्यासाठी, जानेवारीमध्ये पॉलिथिन पिशव्यांमध्ये रोपे तयार केली जातात आणि फेब्रुवारीमध्ये लावली जातात.

बियाण्याचे प्रमाण: एक हेक्टर क्षेत्रासाठी २-२.२५ किलो. बियाणे आवश्यक आहे. पेरणीपूर्वी बियाण्यांवर कॅप्टन (प्रति किलो बियाण्यावर २ ग्रॅम) सारख्या बुरशीनाशकाची पूर्णपणे प्रक्रिया करावी.

पेरणीची पद्धत :-दोन ओळीतील अंतर 150 ते 180 सें. मी., दोन रोपांतील अंतर 60 सें.मी. येवढे असावे.

बीजप्रक्रिया: - बियाणे पेरण्यापूर्वी गौचो ७० डब्ल्यू. एस. करावी. १० ग्रॅम प्रति किलो बियाण्यावर या प्रमाणात बीजप्रक्रिया करावी.

रोग आणि कीटक: फर्टेरा (ड्युपोंड) ४ किलो प्रति एकर किंवा व्हर्टिको (सिंजेंटा) २.५ किलो प्रति एकर खतासह वापरल्याने २१ दिवस रस शोषक कीटकांपासून संरक्षण मिळते.

क्र.	रोग/कीट	नियंत्रण	प्रति लिटर पाण्यात
१	पावडर मिल्ड्यू (पावडर मिल्ड्यू)	बाविस्टिन	०१ ग्रॅम प्रति लिटर
२	केवडा	डायथेन एम ४५	२.५ ग्रॅम प्रति लिटर
३	पांढऱ्या माशी	लॅनो	०२ मि. ली पर ली
४	भोपळा लाल कीटक	फेम	०.२५ मिली ली प्रति ली
५	डिफनिया इंडिका	फेम	0.25 मिली. ली पर ली
६	माइट (लाल कोळी)	मॅजिस्टर	०२ मि. ली पर ली

सिंचन व्यवस्थापन:- पेरणीच्या वेळी शेतात पुरेसा ओलावा असावा, अन्यथा बियाण्याची उगवण आणि वाढ योग्यरित्या होत नाही. पावसाळी पिकांसाठी सिंचनाची विशेष गरज नसते. सरासरी, उन्हाळी पिकांना दर ५ दिवसांनी आणि हिवाळी पिकांना दर १०-१५ दिवसांनी पाणी द्यावे. खोडाची वाढ, फुले येणे फळांच्या फुलोऱ्याच्या आणि वाढीच्या वेळी पाण्याची कमतरता असू नये.

तन नियंत्रण :- वेळोवेळी खुरपणी करून शेत स्वच्छ व तणमुक्त ठेवावे. एक दोन वखराच्या पाळ्या देऊन माती लावावी व शेत तणमुक्त ठेवावे.

पीक काढणी :- फळे कोवळी असतांना काढणी करावी. काढणी सकाळी किंवा संध्याकाळी केल्याने फळांचा ताजेपणा टिकून राहतो.

टीप:- वरील दिलेली माहिती हि आमच्या संशोधन केंद्रात घेतलेल्या चाचण्या वरून दिलेली आहे. यात जमीन, भौगोलिक हवामान, पिकाची नियोजन पद्धती इत्यादी कारणांमुळे या मध्ये बदल होऊ शकतो.

खीरा

किस्में:- शुभांगी, प्राची, ग्रीन सिलेक्शन, ग्रीन गोल्ड, हिमांगी

उपयुक्त जलवायु:- इसकी खेती के लिए सर्वाधिक तापमान 40° सेल्सियस तथा न्यूनतम 20° सेल्सियस होना चाहिए। अच्छी बढ़वार एवं फल-फूल के लिए 25-30° सेल्सियस तापमान अच्छा होता है। अधिक वर्षा, आर्द्रता तथा बदली होने से कीटों एवं रोगों के प्रसार में वृद्धि होती है। अधिक तापमान तथा प्रकाश की अवस्था में नर फूल अधिक निकलते होती है।, जबकि इसके विपरीत मौसम होने पर मादा फूलों की संख्या अधिक होती है।

भूमि चयन:- खीरा की खेती के लिए बलुई दोमट या दोमट भूमि जिसमें जल निकास का उचित प्रबंधन हो, सर्वोत्तम पायी गयी है। भूमि में कार्बन की मात्रा अधिक तथा पी.एच. मान 6.5-7 होना चाहिए। खीरा मुख्य रूप से गर्म जलवायु की फसल है इस पर पाले का प्रभाव अधिक होता है।

भूमि की तैयारी:- अधिक उपजलिए अच्छे तरह से तैयार ज़मीन की आवश्यकता होती है। मिट्टी के भुरभुरा होने तक 2-3 जोताई करें।

खाद एवं उर्वरक:- खेत तैयार करते समय 25 से 30 टन प्रति हेक्टेयर गली सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट अवश्य मिट्टी में मिलाएं। खीरा की खेती के लिए 80 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 60 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर देना चाहिए। फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी तथा नत्रजन की आधी मात्रा बुआई के समय भेड़ पर देना चाहिए। शेष नत्रजन की मात्रा दो बराबर भागों में बाँटकर दुआई के 20 एवं 40 दिनों बाद गुड़ाई के साथ देकर मिट्टी चढ़ा देना चाहिए।

बुआई का समय : मुख्य फसल के रूप में मैदानी क्षेत्रों में बुआई फरवरी एवं जून के प्रथम सप्ताह में करते हैं। दक्षिण भारत में इसकी बुआई जून से लेकर अक्टूबर तक करते हैं, जबकि उत्तर भारत के पर्वतीय भागों में इसकी बुआई अप्रैल-मई में की जाती है। गर्मी की फसल को जल्दी लेने के लिए पालीथिन की थैलियों में जनवरी में पौध तैयार कर फरवरी में रोपण करते हैं।

बीज की मात्रा: एक हेक्टेयर क्षेत्र की बुआई के लिए 2-2.25 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता पड़ती है। बीज की बुआई करने से पहले फफूँदीनाशक दवा जैसे कैप्टान या थिरम (2 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज) से अच्छी तरह शोधित करना चाहिए।

बीज उपचार:- बीजों की बुवाई से पहले गाऊचो 70 डब्ल्यू. एस. 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचार करना चाहिए।

बुआई की विधि: अच्छी तरह से तैयार खेत में 1.5 मी. की दूरी पर मेड़ बना लें। मेड़ों पर 60 से.मी. की दूरी पर बीज बोने के लिए गड्ढे बना लेना चाहिए। एक गड्ढे में 2 बीजों की बुआई करते हैं।

रोग और कीट : खाद के साथ फरटेरा (ड्रपौंड) 4 किलो प्रति एकड़ अथवा क्वार्टिको (सिंजेंटा) 2.5 किलोप्रति एकड़ इस प्रमाण से एस्तेमाल करणे से 21 दिन तक रस चुसाने वाले कीट से संरक्षण मिलता है।

क्र.	रोग/ कीट	नियंत्रण	मात्रा प्रति ली पाणी में
1	चूर्णी फफूँद (चूर्णिल आसिता)	बाविस्टिन	01 ग्राम प्रति ली
2	मृदुरोमिल आसिता	डायथेन एम ४५	2.5 ग्राम प्रति ली
3	सफेद मक्खी	लॅनो	02 मि. ली प्रति ली
4	कटु का लाल कीट	फेम	0.25मि. ली प्रति ली
5	खीरे का फतंगा (डाइफेनीया इंडिका)	फेम	0.25मि. ली प्रति ली
6	माइट (लाल मकड़ी) :	मैजिस्टर	02 मि. ली प्रति ली

सिंचाई प्रबंधन:- बुआई के समय खेत में नमी पर्याप्त मात्रा में रहनी चाहिए अन्यथा बीजों का अंकुरण एवं वृद्धि अच्छी प्रकार से नहीं होती है। बरसात वाली फसल के लिए सिंचाई की विशेष आवश्यकता नहीं पड़ती है। औसतन गर्मी की फसल को पाँचदें दिन तथा जाड़े की फसल को 10-15 दिनों पर पानी देना चाहिए। तने की वृद्धि, फूल आने के समय तथा फल की बढ़वार के समय पानी की कमी नहीं होनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण एवं निकास-गुड़ाई: वर्षाकालीन फसल में खरपतवार की समस्या अधिक होती है। जमाव से लेकर प्रथम 25 दिनों तक खरपतवार फसल को ज्यादा नुकसान पहुँचाते हैं। इससे फसल की वृद्धि पर प्रतिकूल असर पड़ता है तथा पौधों की बढ़वार रूक जाती है। अतः खेत में समय-समय पर खरपतवार निकालते रहना चाहिए। खरपतवार निकालने के बाद खेत की गुड़ाई करके जड़ों के पास मिट्टी चढ़ाना चाहिए, जिससे पौधों का विकास तेजी से होता है।

तुड़ाई एवं उपज: फल कोमल एवं मुलायम अवस्था में तोड़ना चाहिए। फलों की तुड़ाई 2-3 दिनों के अन्तराल पर करते रहना चाहिए।

टिपणी:- उपरोक्त सभी जाणकारी या हमारे अनुसंधान केंद्र पर किये गये प्रयोग पर आधारित है। भिन्न स्थानोपर भिन्न मौसम, भूमि प्रकार एवं ऋतू के कारण उपरोक्त जाणकारी में बदलाव आसकता है।

Cucumber

Hybrids/Varieties: - Shubhangi, Prachi, Green Selection, Green Gold, Himangi

Suitable climate:- For its cultivation, the maximum temperature should be 40° Celsius and the minimum 20° Celsius. For good growth and flowering, 25-30° Celsius temperature is good. Excessive rainfall, humidity and cloudiness increase the spread of pests and diseases. In high temperature and light conditions, more male flowers emerge, whereas in the opposite weather, the number of female flowers is more.

Land selection:- For cucumber cultivation, sandy loam or loamy soil with proper drainage management has been found to be the best. The amount of carbon in the soil should be high and the pH value should be 6.5-7. Cucumber is mainly a crop of hot climate and it is more affected by frost.

Land preparation:- For higher yield, well-prepared land is required. Do 2-3 ploughings till the soil becomes friable.

Manure and Fertilizer:- While preparing the field, mix 25 to 30 tons of rotten cow dung or compost in the soil per hectare.

For cucumber cultivation, 80 kg nitrogen, 60 kg phosphorus and 60 kg potash should be given per hectare. The full quantity of phosphorus and potash and half of nitrogen should be given to the sheep at the time of sowing. The remaining quantity of nitrogen should be divided into two equal parts and given with hoeing 20 and 40 days after sowing and covered with soil.

Sowing time: As a main crop, sowing is done in the plains in the first week of February and June. In South India, it is sown from June to October, whereas in the mountainous regions of North India, it is sown in April-May. To get the summer crop early, seedlings are prepared in polythene bags in January and planted in February.

Seed quantity: 2-2.25 kg of seeds are required for sowing in one-hectare area. Before sowing the seeds, they should be thoroughly treated with fungicides like Captan or Thiram (2 grams per kg of seeds).

Seed treatment: - Before sowing the seeds, they should be treated with Gaucho 70 W.S. 10 grams per kg of seeds.

Method of sowing: Make ridges at a distance of 1.5 m in a well-prepared field. Pits should be made at a distance of 60 cm on the ridges for sowing seeds. 2 seeds are sown in one pit.

Diseases and Pests: Using Fertera (Dupond) 4 kg per acre or Vertico (Syngenta) 2.5 kg per acre along with manure gives protection from sucking insects for 21 days.

Sl.	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per litre
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.5 gram per litre
3	White fly	Lano	02 ml per litre
4	Pumpkin red insect	Fame	0.25 ml per litre
5	Mite (Red spider)	Magister	02 ml per litre

Irrigation Management: - At the time of sowing, there should be sufficient moisture in the field, otherwise the germination and growth of seeds does not take place properly. There is no special need of irrigation for rainy season crops. On an average, summer crops should be watered every five days and winter crops every 10-15 days. There should be no shortage of water during the growth of the stem, flowering and fruit growth.

Weed Control and Weeding: The problem of weeds is more in rainy season crops. From the time of germination to the first 25 days, weeds cause more damage to the crop. This has an adverse effect on the growth of the crop and the growth of the plant stops. Therefore, weeds should be removed from the field from time to time. After removing the weeds, the field should be hoed and soil should be added near the roots, due to which the plants grow faster.

Harvesting and Yield: The full grown fruit should be harvested when they are still green. Delay in harvesting causes the fruit to become unfit for marketing.

Note: - All the above information is based on the experiments conducted at our research center. The above information may change due to different weather, soil type and season at different places.

કાકડી
હાઇબ્રિડ/જાતો: - શુભાંગી, પ્રાચી, ગ્રીન સિલેક્શન, ગ્રીન ગોલ્ડ, હિમાંગી

યોગ્ય આબોહવા:- તેની ખેતી માટે મહત્તમ તાપમાન ૪૦° સેલ્સિયસ અને ન્યૂનતમ ૨૦° સેલ્સિયસ હોવું જોઈએ. સારા વિકાસ અને ફૂલો માટે ૨૫-૩૦° સેલ્સિયસ તાપમાન સારું છે. વધુ પડતો વરસાદ, ભેજ અને વાદળછાયું વાતાવરણ જીવાતો અને રોગોનો ફેલાવો વધારે છે. ઊંચા તાપમાન અને પ્રકાશની સ્થિતિમાં, વધુ નર ફૂલો ઊગે છે, જ્યારે વિપરીત હવામાનમાં, માદા ફૂલોની સંખ્યા વધુ હોય છે.

જમીનની પસંદગી:- કાકડીની ખેતી માટે, યોગ્ય ડ્રેનેજ વ્યવસ્થાપન સાથે રેતાળ લોમ અથવા લોમી માટી શ્રેષ્ઠ હોવાનું જાણવા મળ્યું છે. જમીનમાં કાર્બનનું પ્રમાણ વધારે હોવું જોઈએ અને pH મૂલ્ય ૬.૫-૭ હોવું જોઈએ. કાકડી મુખ્યત્વે ગરમ આબોહવાનો પાક છે અને તે હિમથી વધુ પ્રભાવિત થાય છે.

જમીનની તૈયારી:- વધુ ઉપજ માટે, સારી રીતે તૈયાર કરેલી જમીન જરૂરી છે. જમીન બરડ ન થાય ત્યાં સુધી ૨-૩ ખેડાણ કરો.

ખાતર અને ખાતર:- ખેતર તૈયાર કરતી વખતે, પ્રતિ હેક્ટર જમીનમાં ૨૫ થી ૩૦ ટન સડેલું ગાયનું છાણ અથવા ખાતર ભેળવો.

કાકડીની ખેતી માટે, પ્રતિ હેક્ટર ૮૦ કિલો નાઇટ્રોજન, ૬૦ કિલો ફોસ્ફરસ અને ૬૦ કિલો પોટાશ આપવું જોઈએ. વાવણી સમયે ફોસ્ફરસ અને પોટાશનો સંપૂર્ણ જથ્થો અને નાઇટ્રોજનનો અડધો ભાગ ઘેટાંને આપવો જોઈએ. નાઇટ્રોજનનો બાકીનો જથ્થો બે સમાન ભાગોમાં વહેંચવો જોઈએ અને વાવણીના ૨૦ અને ૪૦ દિવસ પછી ખોદકામ સાથે આપવો જોઈએ અને માટીથી ઢાંકી દેવો જોઈએ.

વાવણીનો સમય: મુખ્ય પાક તરીકે, વાવણી ફેબ્રુઆરી અને જૂનના પહેલા અઠવાડિયામાં મેદાની વિસ્તારોમાં કરવામાં આવે છે. દક્ષિણ ભારતમાં, તે જૂનથી ઓક્ટોબર સુધી વાવવામાં આવે છે, જ્યારે ઉત્તર ભારતના પર્વતીય પ્રદેશોમાં, તે એપ્રિલ-મેમાં વાવવામાં આવે છે. ઉનાળુ પાક વહેલો મેળવવા માટે, જાન્યુઆરીમાં પોલીથીન બેગમાં રોપાઓ તૈયાર કરવામાં આવે છે અને ફેબ્રુઆરીમાં રોપવામાં આવે છે.

બીજની માત્રા: એક હેક્ટર વિસ્તારમાં વાવણી માટે ૨-૨.૨૫ કિલો બીજની જરૂર પડે છે. બીજ વાવતા પહેલા, તેમને કેપ્ટન અથવા થિરામ (૨ ગ્રામ પ્રતિ કિલો બીજ) જેવા ફૂગનાશકોથી સંપૂર્ણ રીતે માવજત કરવી જોઈએ.

બીજ માવજત: - બીજ વાવતા પહેલા, તેમને ગૌથો ૭૦ ડબલ્યુ.એસ. ૧૦ ગ્રામ પ્રતિ કિલો બીજથી માવજત કરવી જોઈએ.

વાવણીની પદ્ધતિ: સારી રીતે તૈયાર કરેલા ખેતરમાં ૧.૫ મીટરના અંતરે પટ્ટાઓ બનાવો. બીજ વાવતા પહેલા પટ્ટાઓ પર ૬૦ સે.મી.ના અંતરે ખાડા બનાવવા જોઈએ. એક ખાડામાં ૨ બીજ વાવવામાં આવે છે.

રોગો અને જીવાતો: ફર્ટિરા (ડુપોન્ડ) ૪ કિલો પ્રતિ એકર અથવા વોર્ટિકો (સિંજેન્ટા) ૨.૫ કિલો પ્રતિ એકર ખાતર સાથે વાપરવાથી ૨૧ દિવસ સુધી શોષક જંતુઓથી રક્ષણ મળે છે.

Sl.	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per litre
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.5 gram per litre
3	White fly	Lano	02 ml per litre
4	Pumpkin red insect	Fame	0.25 ml per litre
5	Mite (Red spider)	Magister	02 ml per litre

સિંચાઈ વ્યવસ્થાપન: - વાવણી સમયે ખેતરમાં પૂરતો ભેજ હોવો જોઈએ, નહીં તો બીજનું અંકુરણ અને વૃદ્ધિ યોગ્ય રીતે થતી નથી. વરસાદી પાક માટે સિંચાઈની કોઈ ખાસ જરૂર નથી. સરેરાશ, ઉનાળુ પાકને દર પાંચ દિવસે અને શિયાળુ પાકને દર ૧૦-૧૫ દિવસે પાણી આપવું જોઈએ. ઢાંડીના વિકાસ, ફૂલો અને ફળના વિકાસ દરમિયાન પાણીની કોઈ અછત ન હોવી જોઈએ.

નીંદણ નિયંત્રણ અને નિંદામણ: વરસાદી પાકમાં નીંદણની સમસ્યા વધુ હોય છે. અંકુરણના સમયથી પહેલા ૨૫ દિવસ સુધી, નીંદણ પાકને વધુ નુકસાન પહોંચાડે છે. આનાથી પાકના વિકાસ પર પ્રતિકૂળ અસર પડે છે અને છોડનો વિકાસ અટકી જાય છે. તેથી, ખેતરમાંથી સમયાંતરે નીંદણ દૂર કરવા જોઈએ. નીંદણ દૂર કર્યા પછી, ખેતરને ખોદીને મૂળની નજીક માટી નાખવી જોઈએ, જેના કારણે છોડ ઝડપથી વિકસે છે.

લણણી અને ઉપજ: પૂર્ણ પાકેલા ફળની કાપણી ત્યારે કરવી જોઈએ જ્યારે તે હજુ પણ લીલા હોય. લણણીમાં વિલંબ થવાથી ફળ માર્કેટિંગ માટે અયોગ્ય બની જાય છે.

નોંધ: - ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં કરવામાં આવેલા પ્રયોગો પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી વિવિધ સ્થળોએ અલગ અલગ હવામાન, માટીના પ્રકાર અને ઋતુને કારણે બદલાઈ શકે છે.

దోసకాయ
సంకరజాతులు/రకాలు: - శుభంగి, ప్రాచి, గ్రీన్ సెలక్షన్, గ్రీన్ గోల్డ్, హిమాంగి

తగిన వాతావరణం:- దాని సాగుకు, గరిష్ట ఉష్ణోగ్రత 40° సెల్సియస్ మరియు కనిష్ట ఉష్ణోగ్రత 20° సెల్సియస్ ఉండాలి. మంచి పెరుగుదల మరియు పుష్పించడానికి, 25-30° సెల్సియస్ ఉష్ణోగ్రత మంచిది. అధిక వర్షపాతం, తేమ మరియు మేఘావృతం తెగుళ్ళు మరియు వ్యాధుల వ్యాప్తిని పెంచుతాయి. అధిక ఉష్ణోగ్రత మరియు తేలికపాటి పరిస్థితులలో, ఎక్కువ మగ పువ్వులు ఉద్భవిస్తాయి, అయితే వ్యతిరేక వాతావరణంలో, ఆడ పువ్వుల సంఖ్య ఎక్కువగా ఉంటుంది.

భూమి ఎంపిక:- దోసకాయ సాగుకు, సరైన పారుదల నిర్వహణతో ఇసుక లోమ్ లేదా లోమ్ నేల ఉత్తమమైనదని కనుగొనబడింది. నేలలో కార్బన్ పరిమాణం ఎక్కువగా ఉండాలి మరియు pH విలువ 6.5-7 ఉండాలి. దోసకాయ ప్రధానంగా వేడి వాతావరణం యొక్క పంట మరియు ఇది మంచు ద్వారా ఎక్కువగా ప్రభావితమవుతుంది.

భూమి తయారీ:- అధిక దిగుబడి కోసం, బాగా సిద్ధం చేసిన భూమి అవసరం. నేల పెళుసుగా మారే వరకు 2-3 సార్లు దున్నండి.

ఎరువు మరియు ఎరువులు:- పొలాన్ని సిద్ధం చేసేటప్పుడు, హెక్టారుకు 25 నుండి 30 టన్నుల కుళ్ళిన ఆవు పేడ లేదా కంపోస్టును మట్టిలో కలపండి.

దోసకాయల సాగు కోసం, హెక్టారుకు 80 కిలోల నత్రజని, 60 కిలోల భాస్వరం మరియు 60 కిలోల పొటాష్ ఇవ్వాలి. విత్తే సమయంలో గొర్రెలకు పూర్తి పరిమాణంలో భాస్వరం మరియు పొటాష్ మరియు సగం నత్రజని ఇవ్వాలి. మిగిలిన నత్రజనిని రెండు సమాన భాగాలుగా విభజించి, విత్తిన 20 మరియు 40 రోజుల తర్వాత గొయ్యితో కప్పాలి.

విత్తే సమయం:- ప్రధాన పంటగా, ఫిబ్రవరి మరియు జూన్ మొదటి వారంలో మైదానాలలో విత్తుతారు. దక్షిణ భారతదేశంలో, జూన్ నుండి అక్టోబర్ వరకు విత్తుతారు, అయితే ఉత్తర భారతదేశంలోని పర్వత ప్రాంతాలలో, ఏప్రిల్-మేలో విత్తుతారు. వేసవి పంటను ముందుగానే పొందడానికి, జనవరిలో పాలిథిన్ సంచులలో మొలకలను తయారు చేసి ఫిబ్రవరిలో నాటుతారు.

విత్తన పరిమాణం:- ఒక హెక్టార్ ప్రాంతంలో విత్తడానికి 2-2.25 కిలోల విత్తనాలు అవసరం. విత్తనాలను విత్తే ముందు, వాటిని కాప్టాన్ లేదా థిరామ్ (కిలో విత్తనాలకు 2 గ్రాములు) వంటి శిలీంధ్రనాశకాలతో పూర్తిగా శుద్ధి చేయాలి.

విత్తన శుద్ధి:- విత్తనాలను విత్తే ముందు, వాటిని గోచో 70 W.S. కిలో విత్తనాలకు 10 గ్రాములుతో శుద్ధి చేయాలి.

విత్తే విధానం:- బాగా సిద్ధం చేసిన పొలంలో 1.5 మీటర్ల దూరంలో గట్లు వేయండి. విత్తనాలు విత్తడానికి గట్లపై 60 సెం.మీ దూరంలో గుంతలు వేయండి. ఒక గుంతలో 2 విత్తనాలు విత్తుతారు.

వ్యాధులు మరియు తెగుళ్ళు: ఎకరానికి 4 కిలోల ఫెర్టెరా (డుపాండ్) లేదా ఎకరానికి 2.5 కిలోల వోర్డిక్ (సింజెంటా) ఎరువుతో కలిపి వాడటం వల్ల 21 రోజుల పాటు కీటకాలు పీల్చుకుండా రక్షణ లభిస్తుంది.

Sl.	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per litre
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.5 gram per litre
3	White fly	Lano	02 ml per litre
4	Pumpkin red insect	Fame	0.25 ml per litre
5	Mite (Red spider)	Magister	02 ml per litre

నీటిపారుదల నిర్వహణ:- విత్తే సమయంలో, పొలంలో తగినంత తేమ ఉండాలి, లేకుంటే విత్తనాల అంకురోత్పత్తి మరియు పెరుగుదల సరిగ్గా జరగదు. వర్షాకాల పంటలకు ప్రత్యేక నీటిపారుదల అవసరం లేదు. సగటున, వేసవి పంటలకు ప్రతి ఐదు రోజులకు మరియు శీతాకాల పంటలకు ప్రతి 10-15 రోజులకు నీరు పెట్టాలి. కాండం పెరుగుదల, పుష్పించే మరియు పండ్ల పెరుగుదల సమయంలో నీటి కొరత ఉండకూడదు.

కలుపు నియంత్రణ మరియు కలుపు తీయుట: వర్షాకాల పంటలలో కలుపు మొక్కల సమస్య ఎక్కువగా ఉంటుంది. అంకురోత్పత్తి సమయం నుండి మొదటి 25 రోజుల వరకు, కలుపు మొక్కలు పంటకు ఎక్కువ నష్టాన్ని కలిగిస్తాయి. ఇది పంట పెరుగుదలపై ప్రతికూల ప్రభావాన్ని చూపుతుంది మరియు మొక్కల పెరుగుదల ఆగిపోతుంది. కాబట్టి, కలుపు మొక్కలను ఎప్పటికప్పుడు పొలం నుండి తొలగించాలి. కలుపు మొక్కలను తొలగించిన తర్వాత, పొలాన్ని గొయ్యితో కోసి, వేర్ల దగ్గర మట్టి వేయాలి, దీనివల్ల మొక్కలు వేగంగా పెరుగుతాయి.

కోత మరియు దిగుబడి: పూర్తిగా పెరిగిన పండ్లను అవి ఇంకా పచ్చగా ఉన్నప్పుడే కోయాలి. కోత ఆలస్యం కావడం వల్ల పండ్లు మార్కెటింగ్ కు పనికిరావు.

గమనిక:- పైన పేర్కొన్న సమాచారం అంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగాలపై ఆధారపడి ఉంటుంది. వివిధ ప్రదేశాలలో వేర్వేరు వాతావరణం, నేల రకం మరియు సీజన్ కారణంగా పైన పేర్కొన్న సమాచారం మారవచ్చు.

ಸೌತೆಕಾಯಿ

ಹೈಬ್ರಿಡ್‌ಗಳು/ವೈವಿಧ್ಯಗಳು: ಶುಭಂಗಿ, ಪ್ರಾಚಿ, ಗ್ರೀನ್ ಸೆಲೆಕ್ಷನ್, ಗ್ರೀನ್ ಗೋಲ್ಡ್, ಹಿಮಂಗಿ

ಸೂಕ್ತ ಹವಾಮಾನ:- ಇದರ ಕೃಷಿ, ಗರಿಷ್ಠ ತಾಪಮಾನ 40° ಸೆಲ್ಸಿಯಸ್ ಮತ್ತು ಕನಿಷ್ಠ 20° ಸೆಲ್ಸಿಯಸ್ ಆಗಿರಬೇಕು. ಉತ್ತಮ ಬೆಳವಣಿಗೆ ಮತ್ತು ಹೂಬಿಡುವಿಕೆಗೆ, 25-30° ಸೆಲ್ಸಿಯಸ್ ತಾಪಮಾನ ಒಳ್ಳೆಯದು. ಅತಿಯಾದ ಮಳೆ, ಆದ್ಯತೆ ಮತ್ತು ಮೋಡ ಕವಿದ ವಾತಾವರಣವು ಕೀಟಗಳು ಮತ್ತು ರೋಗಗಳ ಹರಡುವಿಕೆಯನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುತ್ತದೆ. ಹೆಚ್ಚಿನ ತಾಪಮಾನ ಮತ್ತು ಬೆಳಕಿನ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಗಳಲ್ಲಿ, ಹೆಚ್ಚು ಗಂಡು ಹೂವುಗಳು ಹೊರಹೊಮ್ಮುತ್ತವೆ, ಆದರೆ ವಿರುದ್ಧ ಹವಾಮಾನದಲ್ಲಿ, ಹೆಚ್ಚು ಹೂವುಗಳ ಸಂಖ್ಯೆ ಹೆಚ್ಚು.

ಭೂಮಿಯ ಆಯ್ಕೆ:- ಸೌತೆಕಾಯಿ ಕೃಷಿ, ಸರಿಯಾದ ಒಳಚರಂಡಿ ನಿರ್ವಹಣೆಯೊಂದಿಗೆ ಮರಳು ಮಿಶ್ರಿತ ಲೋಮ್ ಅಥವಾ ಲೋಮಿ ಮಣ್ಣು ಉತ್ತಮವೆಂದು ಕಂಡುಬಂದಿದೆ. ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಇಂಗಾಲದ ಪ್ರಮಾಣ ಹೆಚ್ಚಿರಬೇಕು ಮತ್ತು pH ಮೌಲ್ಯ 6.5-7 ಆಗಿರಬೇಕು. ಸೌತೆಕಾಯಿ ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಬಿಸಿ ವಾತಾವರಣದ ಬೆಳೆಯಾಗಿದ್ದು, ಇದು ಹಿಮದಿಂದ ಹೆಚ್ಚು ಪರಿಣಾಮ ಬೀರುತ್ತದೆ.

ಭೂಮಿ ಸಿದ್ಧತೆ: - ಹೆಚ್ಚಿನ ಇಳುವರಿಗಾಗಿ, ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿದ ಭೂಮಿ ಅಗತ್ಯವಿದೆ. ಮಣ್ಣು ಸಡಿಲವಾಗುವವರೆಗೆ 2-3 ಬಾರಿ ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿ.

ಗೊಬ್ಬರ ಮತ್ತು ಗೊಬ್ಬರ: - ಹೊಲವನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವಾಗ, ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 25 ರಿಂದ 30 ಟನ್ ಕೊಳೆತ ಹಸುವಿನ ಸಗಣೆ ಅಥವಾ ಗೊಬ್ಬರವನ್ನು ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಮಿಶ್ರಣ ಮಾಡಿ.

ಸೌತೆಕಾಯಿ ಕೃಷಿ, ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 80 ಕೆಜಿ ಸಾರಜನಕ, 60 ಕೆಜಿ ರಂಜಕ ಮತ್ತು 60 ಕೆಜಿ ಪೊಟ್ಯಾಶ್ ನೀಡಬೇಕು. ಬಿತ್ತನೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಕುರಿಗಳಿಗೆ ಪೂರ್ಣ ಪ್ರಮಾಣದ ರಂಜಕ ಮತ್ತು ಪೊಟ್ಯಾಶ್ ಮತ್ತು ಅರ್ಧದಷ್ಟು ಸಾರಜನಕವನ್ನು ನೀಡಬೇಕು. ಉಳಿದ ಪ್ರಮಾಣದ ಸಾರಜನಕವನ್ನು ಎರಡು ಸಮಾನ ಭಾಗಗಳಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಿದ 20 ಮತ್ತು 40 ದಿನಗಳ ನಂತರ ಗುದ್ದಲಿಯೊಂದಿಗೆ ನೀಡಬೇಕು ಮತ್ತು ಮಣ್ಣಿನಿಂದ ಮುಚ್ಚಬೇಕು.

ಬಿತ್ತನೆ ಸಮಯ: ಮುಖ್ಯ ಬೆಳೆಯಾಗಿ, ಫೆಬ್ರವರಿ ಮತ್ತು ಜೂನ್ ಮೊದಲ ವಾರದಲ್ಲಿ ಬಯಲು ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ. ದಕ್ಷಿಣ ಭಾರತದಲ್ಲಿ, ಇದನ್ನು ಜೂನ್ ನಿಂದ ಅಕ್ಟೋಬರ್ ವರೆಗೆ ಬಿತ್ತಲಾಗುತ್ತದೆ, ಆದರೆ ಉತ್ತರ ಭಾರತದ ಪರ್ವತ ಪ್ರದೇಶಗಳಲ್ಲಿ, ಇದನ್ನು ಏಪ್ರಿಲ್-ಮೇ ತಿಂಗಳಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತಲಾಗುತ್ತದೆ. ಬೇಸಿಗೆಯ ಬೆಳೆಯನ್ನು ಮೊದಲೇ ಪಡೆಯಲು, ಜನವರಿಯಲ್ಲಿ ಪಾಲಿಥಿನ್ ಚೀಲಗಳಲ್ಲಿ ಮೊಳಕೆಗಳನ್ನು ತಯಾರಿಸಿ ಫೆಬ್ರವರಿಯಲ್ಲಿ ನೆಡಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಬೀಜದ ಪ್ರಮಾಣ: ಒಂದು ಹೆಕ್ಟೇರ್ ಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಬಿತ್ತನೆ ಮಾಡಲು 2-2.25 ಕೆಜಿ ಬೀಜಗಳು ಬೇಕಾಗುತ್ತವೆ. ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತುವ ಮೊದಲು, ಅವುಗಳನ್ನು ಕ್ಯಾಪ್ಸನ್ ಅಥವಾ ಥಿರಮ್ (ಪ್ರತಿ ಕೆಜಿ ಬೀಜಕ್ಕೆ 2 ಗ್ರಾಂ) ನಂತಹ ಶಿಲೀಂಧ್ರನಾಶಕಗಳಿಂದ ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಸಂಸ್ಕರಿಸಬೇಕು.

ಬೀಜ ಸಂಸ್ಕರಣೆ: - ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತುವ ಮೊದಲು, ಅವುಗಳನ್ನು ಗೌಚೊ 70 W.S. ಪ್ರತಿ ಕೆಜಿ ಬೀಜಕ್ಕೆ 10 ಗ್ರಾಂ ನೊಂದಿಗೆ ಸಂಸ್ಕರಿಸಬೇಕು.

ಬಿತ್ತನೆಯ ವಿಧಾನ: ಚೆನ್ನಾಗಿ ಸಿದ್ಧಪಡಿಸಿದ ಹೊಲದಲ್ಲಿ 1.5 ಮೀ ದೂರದಲ್ಲಿ ಗೆರೆಗಳನ್ನು ಮಾಡಿ. ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತಲು ಗೆರೆಗಳ ಮೇಲೆ 60 ಸೆಂ.ಮೀ ದೂರದಲ್ಲಿ ಹೊಂಡಗಳನ್ನು ಮಾಡಬೇಕು. ಒಂದು ಗುಂಡಿಯಲ್ಲಿ 2 ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತಲಾಗುತ್ತದೆ.

ರೋಗಗಳು ಮತ್ತು ಕೀಟಗಳು: ಎಕರೆಗೆ 4 ಕೆಜಿ ಫರ್ಟಿಲೈಸರ್ (ಡುಪಾಂಡ್) ಅಥವಾ ವೋರ್ಟೆಕೊ (ಸಿಂಜಿಂಟಾ) ಅನ್ನು ಎಕರೆಗೆ 2.5 ಕೆಜಿ ಗೊಬ್ಬರದೊಂದಿಗೆ ಬಳಸುವುದರಿಂದ 21 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಕೀಟಗಳನ್ನು ಹೀರದಂತೆ ರಕ್ಷಣೆ ಸಿಗುತ್ತದೆ.

Sl.	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per litre
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.5 gram per litre
3	White fly	Lano	02 ml per litre
4	Pumpkin red insect	Fame	0.25 ml per litre
5	Mite (Red spider)	Magister	02 ml per litre

ನೀರಾವರಿ ನಿರ್ವಹಣೆ: - ಬಿತ್ತನೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ, ಹೊಲದಲ್ಲಿ ಸಾಕಷ್ಟು ತೇವಾಂಶ ಇರಬೇಕು, ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಬೀಜಗಳ ಮೊಳಕೆಯೊಡೆಯುವಿಕೆ ಮತ್ತು ಬೆಳವಣಿಗೆ ಸರಿಯಾಗಿ ನಡೆಯುವುದಿಲ್ಲ. ಮಳೆಗಾಲದ ಬೆಳೆಗಳಿಗೆ ವಿಶೇಷ ನೀರಾವರಿ ಅಗತ್ಯವಿಲ್ಲ. ಸರಾಸರಿ, ಬೇಸಿಗೆಯ ಬೆಳೆಗಳಿಗೆ ಪ್ರತಿ ಐದು ದಿನಗಳಿಗೊಮ್ಮೆ ಮತ್ತು ಚಳಿಗಾಲದ ಬೆಳೆಗಳಿಗೆ ಪ್ರತಿ 10-15 ದಿನಗಳಿಗೊಮ್ಮೆ ನೀರು ಹಾಕಬೇಕು. ಕಾಂಡದ ಬೆಳವಣಿಗೆ, ಹೂಬಿಡುವಿಕೆ ಮತ್ತು ಹಣ್ಣಿನ ಬೆಳವಣಿಗೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ನೀರಿನ ಕೊರತೆ ಇರಬಾರದು.

ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ ಮತ್ತು ಕಳೆ ತೆಗೆಯುವಿಕೆ: ಮಳೆಗಾಲದ ಬೆಳೆಗಳಲ್ಲಿ ಕಳೆಗಳ ಸಮಸ್ಯೆ ಹೆಚ್ಚು. ಮೊಳಕೆಯೊಡೆಯುವ ಸಮಯದಿಂದ ಮೊದಲ 25 ದಿನಗಳವರೆಗೆ, ಕಳೆಗಳು ಬೆಳೆಗೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಹಾನಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡುತ್ತವೆ. ಇದು ಬೆಳೆಯ ಬೆಳವಣಿಗೆಯ ಮೇಲೆ ಪ್ರತಿಕೂಲ ಪರಿಣಾಮ ಬೀರುತ್ತದೆ ಮತ್ತು ಸಸ್ಯದ ಬೆಳವಣಿಗೆ ನಿಲ್ಲುತ್ತದೆ. ಆದ್ದರಿಂದ, ಕಾಲಕಾಲಕ್ಕೆ ಹೊಲದಿಂದ ಕಳೆಗಳನ್ನು ತೆಗೆಯಬೇಕು. ಕಳೆಗಳನ್ನು ತೆಗೆದ ನಂತರ, ಹೊಲವನ್ನು ಸಲಿಕೆಯಿಂದ ಅಗೆದು ಬೇರುಗಳ ಬಳಿ ಮಣ್ಣನ್ನು ಸೇರಿಸಬೇಕು, ಇದರಿಂದಾಗಿ ಸಸ್ಯಗಳು ವೇಗವಾಗಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತವೆ.

ಕೊಯ್ಲು ಮತ್ತು ಇಳುವರಿ: ಪೂರ್ಣವಾಗಿ ಬೆಳೆದ ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಅವು ಇನ್ನೂ ಹಸಿರಾಗಿರುವಾಗಲೇ ಕೊಯ್ಲು ಮಾಡಬೇಕು. ಕೊಯ್ಲು ವಿಳಂಬವಾದರೆ ಹಣ್ಣುಗಳು ಮಾರುಕಟ್ಟೆಗೆ ಅನರ್ಹವಾಗುತ್ತವೆ.

ಗಮನಿಸಿ: - ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿಭಿನ್ನ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ವಿಭಿನ್ನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ಋತುವಿನ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.

তিয়হ
সংকৰ/জাত:- শুভাংগী, প্ৰাচী, সেউজ নিৰ্বাচন, সেউজ সোণ, হিমাংগী

উপযুক্ত জলবায়ু:- ইয়াৰ খেতিৰ বাবে সৰ্বোচ্চ উষ্ণতা ৪০° চেলছিয়াছ আৰু সৰ্বনিম্ন ২০° চেলছিয়াছ হ'ব লাগে। ভাল বৃদ্ধি আৰু ফুল ফুলাৰ বাবে ২৫-৩০° চেলছিয়াছ উষ্ণতা ভাল। অত্যধিক বৰষুণ, আৰ্দ্ৰতা আৰু ডাৱৰীয়া হোৱাৰ ফলত কীট-পতংগ আৰু ৰোগৰ বিস্তাৰ বৃদ্ধি পায়। উচ্চ উষ্ণতা আৰু পোহৰৰ পৰিস্থিতিত অধিক মতা ফুল ওলায়, আনহাতে বিপৰীত বতৰত মাইকী ফুলৰ সংখ্যা বেছি হয়।

ভূমি নিৰ্বাচন:- শসা খেতিৰ বাবে বালিচহীয়া লোম বা লোমীয়া মাটি সঠিক নিষ্কাশন ব্যৱস্থাপনাৰে সৰ্বোত্তম বুলি ধৰা পৰিছে। মাটিত কাৰ্বনৰ পৰিমাণ বেছি হ'ব লাগে আৰু পি এইচ মান ৬.৫-৭ হ'ব লাগে। শসা মূলতঃ উষ্ণ জলবায়ুৰ শস্য আৰু ইয়াৰ ওপৰত হিমৰ প্ৰভাৱ বেছি।

মাটি প্ৰস্তুতি:- অধিক উৎপাদনৰ বাবে সু-প্ৰস্তুত মাটিৰ প্ৰয়োজন। মাটি ভাঙি যোৱালৈকে ২-৩ টা হাল বোৱা কৰক।

গোবৰ আৰু সাৰ:- পথাৰ প্ৰস্তুত কৰাৰ সময়ত প্ৰতি হেক্টৰ মাটিত ২৫ৰ পৰা ৩০ টন পচি যোৱা গৰুৰ গোবৰ বা পচন সাৰ মিহলাই দিব লাগে।

শসা খেতিৰ বাবে প্ৰতি হেক্টৰত ৮০ কেজি নাইট্ৰজেন, ৬০ কেজি ফছফৰাছ আৰু ৬০ কেজি পটাছ দিব লাগে। ভেড়াৰ বীজ সিঁচাৰ সময়ত সম্পূৰ্ণ পৰিমাণৰ ফছফৰাছ আৰু পটাছ আৰু আধা নাইট্ৰজেন দিব লাগে। বাকী থকা নাইট্ৰজেনক দুটা সমান ভাগত ভাগ কৰি বীজ সিঁচাৰ ২০ আৰু ৪০ দিনৰ পিছত কোৰ মাৰি দি মাটিৰে ঢাকি দিব লাগে।

বীজ সিঁচাৰ সময়:- প্ৰধান শস্য হিচাপে ফেব্ৰুৱাৰী আৰু জুন মাহৰ প্ৰথম সপ্তাহত ভৈয়ামত বীজ সিঁচা হয়। দক্ষিণ ভাৰতত জুন মাহৰ পৰা অক্টোবৰ মাহলৈকে বীজ সিঁচা হয়, আনহাতে উত্তৰ ভাৰতৰ পাহাৰীয়া অঞ্চলত এপ্ৰিল-মে মাহত সিঁচা হয়। গ্ৰীষ্মকালীন শস্য সোনকালে পাবলৈ জানুৱাৰী মাহত পলিথিনৰ মোনাত পুলি প্ৰস্তুত কৰি ফেব্ৰুৱাৰী মাহত ৰোপণ কৰা হয়।

বীজৰ পৰিমাণ:- এক হেক্টৰ মাটিত বীজ সিঁচাৰ বাবে ২-২.২৫ কেজি বীজৰ প্ৰয়োজন হয়। বীজ সিঁচাৰ আগতে কেপ্তান বা থিৰামৰ দৰে ভেকুৰনাশক (প্ৰতি কেজি বীজত ২ গ্ৰাম) ভালদৰে শোধন কৰিব লাগে।

বীজ শোধন:- বীজ সিঁচাৰ আগতে গৌচো ৭০ ডব্লিউ.এছ. প্ৰতি কেজি বীজত ১০ গ্ৰাম।

বীজ সিঁচাৰ পদ্ধতি:- ভালদৰে প্ৰস্তুত কৰা পথাৰত ১.৫ মিটাৰ দূৰত্বত শিখৰ তৈয়াৰ কৰিব লাগে। বীজ সিঁচাৰ বাবে শিখৰত ৬০ চে:মি: দূৰত্বত গাঁত বনাব লাগে। এটা গাঁতত ২টা বীজ সিঁচা হয়।

ৰোগ আৰু কীট-পতংগ:- ফেব্ৰেটাৰ (Dupon) প্ৰতি একৰত ৪ কেজি বা Vortico (Syngenta) ২.৫ কিলোগ্ৰাম প্ৰতি একৰত গোবৰৰ সৈতে ব্যৱহাৰ কৰিলে ২১ দিনলৈকে চুহি খোৱা পোক-পৰুৱাৰ পৰা সুৰক্ষা পোৱা যায়।

Sl.	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per litre
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.5 gram per litre
3	White fly	Lano	02 ml per litre
4	Pumpkin red insect	Fame	0.25 ml per litre
5	Mite (Red spider)	Magister	02 ml per litre

জলসিঞ্চন ব্যৱস্থাপনা:- বীজ সিঁচাৰ সময়ত পথাৰত পৰ্যাপ্ত আৰ্দ্ৰতা থাকিব লাগে, অন্যথা বীজৰ অংকুৰণ আৰু বৃদ্ধি সঠিকভাৱে নহয়। বাৰিষাৰ শস্যৰ বাবে জলসিঞ্চনৰ বিশেষ প্ৰয়োজন নাই। গড়ে গ্ৰীষ্মকালীন শস্যত প্ৰতি পাঁচ দিনৰ মূৰে মূৰে আৰু শীতকালীন শস্যত ১০-১৫ দিনৰ মূৰে মূৰে পানী দিব লাগে। ঠাৰিৰ বৃদ্ধি, ফুল ফুলা আৰু ফলৰ বৃদ্ধিৰ সময়ত পানীৰ অভাৱ হ'ব নালাগে।

অপতৃণ নিয়ন্ত্ৰণ আৰু অপতৃণ প্ৰণয়ন:- বাৰিষা কালৰ শস্যত অপতৃণৰ সমস্যা বেছি। অংকুৰণৰ সময়ৰ পৰা প্ৰথম ২৫ দিনলৈকে অপতৃণে শস্যৰ অধিক ক্ষতি কৰে। ইয়াৰ ফলত শস্যৰ বৃদ্ধিত বিৰূপ প্ৰভাৱ পৰে আৰু উদ্ভিদৰ বৃদ্ধি বন্ধ হৈ যায়। সেয়ে সময়ে সময়ে পথাৰৰ পৰা অপতৃণ আঁতৰাই পেলাব লাগে। অপতৃণ আঁতৰোৱাৰ পিছত পথাৰত কোৰ মাৰি শিপাৰ ওচৰত মাটি যোগ কৰিব লাগে, যাৰ বাবে গছবোৰ বেছি খৰকৈ বাঢ়ি যায়।

চপোৱা আৰু উৎপাদন:- পূৰ্ণাংগ হোৱা ফলবোৰ সেউজীয়া হৈ থকাৰ সময়ত চপাব লাগে। চপোৱাত পলম হোৱাৰ ফলত ফল বিপণনৰ বাবে অযোগ্য হৈ পৰে।

বি:দ্ৰ:- ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্ৰত কৰা পৰীক্ষাৰ ভিত্তিত কৰা হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন বতৰ, মাটিৰ প্ৰকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে উপৰোক্ত তথ্য সলনি হ'ব পাৰে।

শসা
হাইব্রিড/জাত: - শুভাঙ্গী, প্রাচী, গ্রিন সিলেকশন, গ্রিন গোল্ড, হিমাঙ্গী

উপযুক্ত জলবায়ু:- এর চাষের জন্য সর্বোচ্চ তাপমাত্রা ৪০° সেলসিয়াস এবং সর্বনিম্ন ২০° সেলসিয়াস হওয়া উচিত। ভালো বৃদ্ধি এবং ফুল ফোটার জন্য ২৫-৩০° সেলসিয়াস তাপমাত্রা ভালো। অতিরিক্ত বৃষ্টিপাত, আর্দ্রতা এবং মেঘলাভাব পোকামাকড় এবং রোগের বিস্তার বৃদ্ধি করে। উচ্চ তাপমাত্রা এবং আলোর পরিস্থিতিতে, বেশি পুরুষ ফুল ফুটে, যেখানে বিপরীত আবহাওয়ায়, স্ত্রী ফুলের সংখ্যা বেশি।

ভূমি নির্বাচন:- শসা চাষের জন্য, সঠিক নিষ্কাশন ব্যবস্থাপনা সহ বেলে দোআঁশ বা দোআঁশ মাটি সর্বোত্তম বলে প্রমাণিত হয়েছে। মাটিতে কার্বনের পরিমাণ বেশি এবং pH মান ৬.৫-৭ হওয়া উচিত। শসা মূলত গরম জলবায়ুর ফসল এবং এটি তুষারপাত দ্বারা বেশি প্রভাবিত হয়।

জমি তৈরি:- অধিক ফলনের জন্য, ভালোভাবে প্রস্তুত জমি প্রয়োজন। মাটি ভঙ্গুর না হওয়া পর্যন্ত ২-৩ বার চাষ করুন।

সার এবং সার:- ক্ষেত তৈরির সময়, প্রতি হেক্টরে মাটিতে ২৫ থেকে ৩০ টন পচা গোবর বা কম্পোস্ট মিশিয়ে দিন।

শসা চাষের জন্য, প্রতি হেক্টরে ৮০ কেজি নাইট্রোজেন, ৬০ কেজি ফসফরাস এবং ৬০ কেজি পটাশ দিতে হবে। বপনের সময় সম্পূর্ণ পরিমাণ ফসফরাস এবং পটাশ এবং অর্ধেক নাইট্রোজেন ভেড়াদের দিতে হবে। বাকি পরিমাণ নাইট্রোজেন দুটি সমান ভাগে ভাগ করে বপনের ২০ এবং ৪০ দিন পরে নিড়ানি দিয়ে মাটি দিয়ে ঢেকে দিতে হবে।

বপনের সময়: প্রধান ফসল হিসেবে, সমভূমিতে ফেব্রুয়ারি এবং জুনের প্রথম সপ্তাহে বপন করা হয়। দক্ষিণ ভারতে এটি জুন থেকে অক্টোবর পর্যন্ত বপন করা হয়, যেখানে উত্তর ভারতের পাহাড়ি অঞ্চলে এটি এপ্রিল-মে মাসে বপন করা হয়। গ্রীষ্মকালীন ফসল তাড়াতাড়ি পেতে, জানুয়ারিতে পলিথিন ব্যাগে চারা তৈরি করে ফেব্রুয়ারিতে রোপণ করা হয়।

বীজের পরিমাণ: এক হেক্টর জমিতে বপনের জন্য ২-২.২৫ কেজি বীজ প্রয়োজন। বীজ বপনের আগে, ক্যাপ্টান বা থিরাম (প্রতি কেজি বীজে ২ গ্রাম) এর মতো ছত্রাকনাশক দিয়ে বীজ পুঙ্খানুপুঙ্খভাবে শোধন করতে হবে।

বীজ শোধন:- বীজ বপনের আগে, প্রতি কেজি বীজে গাউচো ৭০ ওয়াট.এস. ১০ গ্রাম দিয়ে শোধন করতে হবে।

বপন পদ্ধতি: একটি ভালভাবে প্রস্তুত জমিতে ১.৫ মিটার দূরত্বে ঢাল তৈরি করুন। বীজ বপনের জন্য ঢালগুলিতে ৬০ সেমি দূরত্বে গর্ত তৈরি করতে হবে। একটি গর্তে ২টি বীজ বপন করতে হবে।

রোগ এবং পোকামাকড়: প্রতি একরে ফেরটেরা (ডুপন্ড) ৪ কেজি বা ভোটিকো (সিনজেন্টা) ২.৫ কেজি সারের সাথে ব্যবহার করলে ২১ দিনের জন্য শোষক পোকামাকড় থেকে সুরক্ষা পাওয়া যায়।

Sl.	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per litre
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.5 gram per litre
3	White fly	Lano	02 ml per litre
4	Pumpkin red insect	Fame	0.25 ml per litre
5	Mite (Red spider)	Magister	02 ml per litre

সেচ ব্যবস্থাপনা:- বপনের সময় জমিতে পর্যাপ্ত আর্দ্রতা থাকা উচিত, অন্যথায় বীজের অঙ্কুরোদগম এবং বৃদ্ধি সঠিকভাবে হয় না। বর্ষাকালীন ফসলের জন্য সেচের বিশেষ প্রয়োজন হয় না। গড়ে, গ্রীষ্মকালীন ফসলে প্রতি পাঁচ দিন অন্তর এবং শীতকালীন ফসলে প্রতি ১০-১৫ দিন অন্তর জল দেওয়া উচিত। কাণ্ডের বৃদ্ধি, ফুল ফোটা এবং ফলের বৃদ্ধির সময় জলের অভাব হওয়া উচিত নয়।

আগাছা নিয়ন্ত্রণ এবং আগাছা: বর্ষাকালীন ফসলে আগাছার সমস্যা বেশি হয়। অঙ্কুরোদগমের সময় থেকে প্রথম ২৫ দিন পর্যন্ত আগাছা ফসলের বেশি ক্ষতি করে। এর ফলে ফসলের বৃদ্ধির উপর বিরূপ প্রভাব পড়ে এবং গাছের বৃদ্ধি বন্ধ হয়ে যায়। তাই, মাঝে মাঝে ক্ষেত থেকে আগাছা অপসারণ করা উচিত। আগাছা অপসারণের পর, ক্ষেতটি খুঁড়ে শিকড়ের কাছে মাটি যোগ করতে হবে, যার ফলে গাছগুলি দ্রুত বৃদ্ধি পায়।

ফসল সংগ্রহ এবং ফলন: পূর্ণ বয়স্ক ফলগুলি তখনই সংগ্রহ করা উচিত যখন তারা এখনও সবুজ থাকে। ফসল কাটার বিলম্বের ফলে ফল বাজারজাতকরণের জন্য অনুপযুক্ত হয়ে পড়ে।

বিঃদ্রঃ:- উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষা-নিরীক্ষার উপর ভিত্তি করে। বিভিন্ন স্থানে বিভিন্ন আবহাওয়া, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরের তথ্যগুলি পরিবর্তিত হতে পারে।

ਖੀਰਾ

ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ/ਕਿਸਮਾਂ: - ਸੁਭਾਂਗੀ, ਪ੍ਰਾਚੀ, ਗ੍ਰੀਨ ਸਿਲੈਕਸ਼ਨ, ਗ੍ਰੀਨ ਗੋਲਡ, ਹਿਮਾਂਗੀ

ਉਚਿਤ ਜਲਵਾਯੂ:- ਇਸਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ, ਵੱਧ ਤੋਂ ਵੱਧ ਤਾਪਮਾਨ 40° ਸੈਲਸੀਅਸ ਅਤੇ ਘੱਟੋ-ਘੱਟ 20° ਸੈਲਸੀਅਸ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਚੰਗੇ ਵਾਧੇ ਅਤੇ ਫੁੱਲਾਂ ਲਈ, 25-30° ਸੈਲਸੀਅਸ ਤਾਪਮਾਨ ਚੰਗਾ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜ਼ਿਆਦਾ ਬਾਰਿਸ਼, ਨਮੀ ਅਤੇ ਬੱਦਲਵਾਈ ਕੀੜਿਆਂ ਅਤੇ ਬਿਮਾਰੀਆਂ ਦੇ ਫੈਲਾਅ ਨੂੰ ਵਧਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਉੱਚ ਤਾਪਮਾਨ ਅਤੇ ਰੌਸ਼ਨੀ ਦੀਆਂ ਸਥਿਤੀਆਂ ਵਿੱਚ, ਵਧੇਰੇ ਨਰ ਫੁੱਲ ਉਗਦੇ ਹਨ, ਜਦੋਂ ਕਿ ਉਲਟ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ, ਮਾਦਾ ਫੁੱਲਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਵਧੇਰੇ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਚੋਣ:- ਖੀਰੇ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ, ਸਹੀ ਨਿਕਾਸੀ ਪ੍ਰਬੰਧਨ ਵਾਲੀ ਰੇਤਲੀ ਦੇਮਟ ਜਾਂ ਦੇਮਟ ਮਿੱਟੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਪਾਈ ਗਈ ਹੈ। ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਕਾਰਬਨ ਦੀ ਮਾਤਰਾ ਜ਼ਿਆਦਾ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਅਤੇ pH ਮੁੱਲ 6.5-7 ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਖੀਰਾ ਮੁੱਖ ਤੌਰ 'ਤੇ ਗਰਮ ਜਲਵਾਯੂ ਦੀ ਫਸਲ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਠੰਡ ਤੋਂ ਵਧੇਰੇ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਤਿਆਰੀ:- ਵੱਧ ਝਾੜ ਲਈ, ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤਿਆਰ ਕੀਤੀ ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮਿੱਟੀ ਦੇ ਢਿੱਲੇ ਹੋਣ ਤੱਕ 2-3 ਵਾਰ ਵਾਹੋ।

ਖਾਦ ਅਤੇ ਖਾਦ:- ਖੇਤ ਤਿਆਰ ਕਰਦੇ ਸਮੇਂ, ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ 25 ਤੋਂ 30 ਟਨ ਸੜੀ ਹੋਈ ਗਾਂ ਦਾ ਗੋਬਰ ਜਾਂ ਖਾਦ ਮਿਲਾਓ।

ਖੀਰੇ ਦੀ ਕਾਸ਼ਤ ਲਈ, ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ 80 ਕਿਲੋ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ, 60 ਕਿਲੋ ਫਾਸਫੋਰਸ ਅਤੇ 60 ਕਿਲੋ ਪੋਟਾਸ਼ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਬਿਜਾਈ ਸਮੇਂ ਭੇਡਾਂ ਨੂੰ ਫਾਸਫੋਰਸ ਅਤੇ ਪੋਟਾਸ਼ ਦੀ ਪੂਰੀ ਮਾਤਰਾ ਅਤੇ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ ਦਾ ਅੱਧਾ ਹਿੱਸਾ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਬਾਕੀ ਬਚੀ ਨਾਈਟ੍ਰੋਜਨ ਨੂੰ ਦੋ ਬਰਾਬਰ ਹਿੱਸਿਆਂ ਵਿੱਚ ਵੰਡਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ 20 ਅਤੇ 40 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਗੋਡੀ ਨਾਲ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਮਿੱਟੀ ਨਾਲ ਢੱਕ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਸਮਾਂ: ਮੁੱਖ ਫਸਲ ਦੇ ਤੌਰ 'ਤੇ, ਮੈਦਾਨੀ ਇਲਾਕਿਆਂ ਵਿੱਚ ਫਰਵਰੀ ਅਤੇ ਜੂਨ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਹਫ਼ਤੇ ਬਿਜਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਦੱਖਣੀ ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ, ਇਸਦੀ ਬਿਜਾਈ ਜੂਨ ਤੋਂ ਅਕਤੂਬਰ ਤੱਕ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਜਦੋਂ ਕਿ ਉੱਤਰੀ ਭਾਰਤ ਦੇ ਪਹਾੜੀ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ, ਇਸਦੀ ਬਿਜਾਈ ਅਪ੍ਰੈਲ-ਮਈ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਗਰਮੀਆਂ ਦੀ ਫਸਲ ਜਲਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ, ਜਨਵਰੀ ਵਿੱਚ ਪੋਲੀਥੀਨ ਬੈਗਾਂ ਵਿੱਚ ਪੌਦੇ ਤਿਆਰ ਕੀਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਫਰਵਰੀ ਵਿੱਚ ਲਗਾਏ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਬੀਜ ਦੀ ਮਾਤਰਾ: ਇੱਕ ਹੈਕਟੇਅਰ ਰਕਬੇ ਵਿੱਚ ਬਿਜਾਈ ਲਈ 2-2.25 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜਾਂ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਕੈਪਟਨ ਜਾਂ ਬੀਰਮ (2 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ) ਵਰਗੇ ਉੱਲੀਨਾਸ਼ਕਾਂ ਨਾਲ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸੋਧਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਬੀਜ ਉਪਚਾਰ:- ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਗੋਚੇ 70 ਡਬਲਯੂ.ਐਸ. 10 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਬੀਜ ਨਾਲ ਸੋਧਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਬਿਜਾਈ ਦਾ ਤਰੀਕਾ: ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤਿਆਰ ਕੀਤੇ ਖੇਤ ਵਿੱਚ 1.5 ਮੀਟਰ ਦੀ ਦੂਰੀ 'ਤੇ ਵੱਟਾਂ ਬਣਾਓ। ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਲਈ ਵੱਟਾਂ 'ਤੇ 60 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ ਦੀ ਦੂਰੀ 'ਤੇ ਟੋਏ ਬਣਾਏ ਜਾਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ। ਇੱਕ ਟੋਏ ਵਿੱਚ 2 ਬੀਜ ਬੀਜੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਬਿਮਾਰੀਆਂ ਅਤੇ ਕੀੜੇ: ਫਰਟੇਰਾ (ਡ੍ਰਾਪੌਡ) 4 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਜਾਂ ਵੋਰਟੀਕੋ (ਸਿੰਜੈਟਾ) 2.5 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਰੂੜੀ ਦੇ ਨਾਲ ਵਰਤਣ ਨਾਲ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਚੂਸਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਬਚਾਅ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

Sl.	Disease/Pest	Control	Amount per litre of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per litre
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.5 gram per litre
3	White fly	Lano	02 ml per litre
4	Pumpkin red insect	Fame	0.25 ml per litre
5	Mite (Red spider)	Magister	02 ml per litre

ਸਿੰਜਾਈ ਪ੍ਰਬੰਧਨ:- ਬਿਜਾਈ ਸਮੇਂ, ਖੇਤ ਵਿੱਚ ਲੋੜੀਂਦੀ ਨਮੀ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ, ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਬੀਜਾਂ ਦਾ ਉਗਣ ਅਤੇ ਵਾਧਾ ਸਹੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਬਰਸਾਤੀ ਮੌਸਮ ਦੀਆਂ ਫਸਲਾਂ ਲਈ ਸਿੰਜਾਈ ਦੀ ਕੋਈ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਔਸਤਨ, ਗਰਮੀਆਂ ਦੀਆਂ ਫਸਲਾਂ ਨੂੰ ਹਰ ਪੰਜ ਦਿਨਾਂ ਵਿੱਚ ਅਤੇ ਸਰਦੀਆਂ ਦੀਆਂ ਫਸਲਾਂ ਨੂੰ ਹਰ 10-15 ਦਿਨਾਂ ਵਿੱਚ ਪਾਣੀ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਤਣੇ ਦੇ ਵਾਧੇ, ਫੁੱਲ ਅਤੇ ਫਲਾਂ ਦੇ ਵਾਧੇ ਦੌਰਾਨ ਪਾਣੀ ਦੀ ਕੋਈ ਕਮੀ ਨਹੀਂ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ।

ਨਦੀਨ ਨਿਯੰਤਰਣ ਅਤੇ ਨਦੀਨ: ਬਰਸਾਤੀ ਮੌਸਮ ਦੀਆਂ ਫਸਲਾਂ ਵਿੱਚ ਨਦੀਨਾਂ ਦੀ ਸਮੱਸਿਆ ਵਧੇਰੇ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਉਗਣ ਦੇ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਪਹਿਲੇ 25 ਦਿਨਾਂ ਤੱਕ, ਨਦੀਨ ਫਸਲ ਨੂੰ ਵਧੇਰੇ ਨੁਕਸਾਨ ਪਹੁੰਚਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਨਾਲ ਫਸਲ ਦੇ ਵਾਧੇ 'ਤੇ ਮਾੜਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪੈਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਪੌਦੇ ਦਾ ਵਾਧਾ ਰੁਕ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ, ਸਮੇਂ-ਸਮੇਂ 'ਤੇ ਖੇਤ ਵਿੱਚੋਂ ਨਦੀਨਾਂ ਨੂੰ ਹਟਾ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਨਦੀਨਾਂ ਨੂੰ ਹਟਾਉਣ ਤੋਂ ਬਾਅਦ, ਖੇਤ ਨੂੰ ਗੋਡਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜੜ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨੇੜੇ ਮਿੱਟੀ ਪਾਉਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਕਾਰਨ ਪੌਦੇ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ ਵਧਦੇ ਹਨ।

ਕਟਾਈ ਅਤੇ ਝਾੜ: ਪੂਰੇ ਵਧੇ ਹੋਏ ਫਲ ਦੀ ਕਟਾਈ ਉਦੋਂ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਜਦੋਂ ਉਹ ਅਜੇ ਵੀ ਹਰੇ ਹੁੰਦੇ ਹਨ। ਕਟਾਈ ਵਿੱਚ ਦੇਰੀ ਨਾਲ ਫਲ ਮੰਡੀਕਰਨ ਲਈ ਅਯੋਗ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਨੋਟ:- ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ ਵਿਖੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗਾਂ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਮੌਸਮ, ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮ ਦੇ ਕਾਰਨ ਬਦਲ ਸਕਦੀ ਹੈ।